जैमिनी सूत्रम् से संकलन

चन्द्र प्रकाश शर्मा

प्रथम अध्याय द्वितीय पादः

कारकांश से सप्तम भाव व पत्नी विचार

लाभे चन्द्रगुरूभ्यां सुन्दरी ॥57॥

कारकांश से सातवें स्थान में यदि चन्द्रमा व बृहस्पति की दृष्टि या युति हो तो मनुष्य का विवाह सुन्दर स्त्री से होता है।

राहुणा विधवा ॥58॥

यदि उक्त सातवें स्थान में राहु की दृष्टि या युति हो तो मनुष्य को विधवा स्त्री की प्राप्ति होती है।

शनिना वयोधिकारोगिणी तपस्विनी वा ॥59॥

यदि वहाँ शनि की दृष्टि हो या शनि वहाँ स्थित हो तो मनुष्य को अपने से अधिक अवस्था वाली, रोगिणी या तपस्विनी स्त्री मिलती है।

कुजेन विकलांगी ॥60॥

यदि उक्त सप्तम स्थान में मंगल स्थित हो तो मनुष्य की स्त्री विकलांग अर्थात् दोषपूर्ण अंग वाली होती है।

रविणा स्वकुले गुप्ता च ॥61॥

उक्त सप्तम स्थान में यदि सूर्य स्थित हो या दृष्टि रखता हो तो मनुष्य को विकलांग एवं नितान्त घरेलू स्त्री मिलती है। ऐसी स्त्री घर की सीमाओं में ही जीवन बिताती है।

बुधेन कलावती ॥62॥

यदि उक्त सप्तम स्थान में बुध की स्थिति या दृष्टि हो तो मनुष्य की स्त्री गीत, वाद्य आदि ललित कलाओं में कुशल होती है।

चापे चन्द्रेणानावृते देशे ॥63॥

कारकांश लग्न से चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य खुले आकाश के नीचे प्रथम बार स्त्री संगम करता है।

पद लग्न व दाम्पत्य सुख

केन्द्रत्रिकोणोपचयेषु द्वयोर्मैत्री ॥20॥

सप्तम स्थान का पद यदि लग्न-पद से केन्द्र (1,4,7,10) त्रिकोण (5,9) या उपचय (3,6,10,11) स्थानों में पड़ता हो तो दोनों की परस्पर मैत्री होती है। पति व पत्नी में आपसी तालमेल बना रहता है।

इसी सूत्र के आधार पर आप अन्य सम्बन्धियों का भी विचार कर सकते हैं। जैसे पुत्र स्थान का पद यदि पद से उक्त स्थानों में हो तो पुत्र से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। इसी प्रकार पिता, माता, भाई, मित्र आदि के पद का भी विचार किया जा सकता है।

रिपुरोगचिन्तासु वैरम् ॥21॥

यदि सप्तम स्थान का पद, पद लग्न से षष्ठ, अष्टम या द्वादश में पड़े तो दोनों पक्षों में शत्रुता या मनमुटाव समझना चाहिए।

सप्तम स्थान का पद व श्रीमन्तता

लाभपदे केन्द्रे त्रिकोणे वा श्रीमन्तः ॥18॥

सप्तम स्थान का पद यदि पद लग्न से केन्द्र या त्रिकोण स्थानों में पड़ता हो तो मनुष्य धनाढ्य होता है।

यहाँ पर उपचय स्थानों का भी ग्रहण करना चाहिए, ऐसा हमारा विचार है। तब 1,3,4,5,6,7,9,10,11 स्थानों में सप्तम पद पड़ने पर व्यक्ति को धनाढ्य माना जाएगा।

अन्यथा दु:स्थे ॥19॥

यदि सप्तम स्थान का पद लग्न-पद से दुष्ट स्थानों में पड़ता हो अर्थात् 6,8,12 स्थानों में हो तो मनुष्य निर्धन होता है।

प्रथमाध्यायस्य चतुर्थ पाद:

उपपदं पदं पित्रनुचरात्

लग्न से द्वादश स्थान का पद ही उपपद कहलाता है। यहां पितृ शब्द से लग्न भाव का आशय है और लग्न का अनुचर अर्थात् पिछला भाव द्वादश भाव होता है।

'एवं रि:फगृहाद् भवेद् उपपदं तत्रैव सौम्ये तदा ।'
तज्जाया हि सुरूपिणी गुणवती सा स्याच्चिरं जीविनी॥'
(अ.4/ श्लोक-39,40)

'जिस भाव का उपपद जानना हो तो उसके रिष्फ भाव (द्वादश भाव) का विचार करना चाहिए। इस उपपद में यदि शुभग्रह हो तो मनुष्य की पत्नी गुणवती, सुन्दर व लम्बी आयु वाली होती है। इसी के श्लोक के अनुसार स्त्री का विचार सप्तम भाव के पद व लग्न के उपपद से करना चाहिए। जिस प्रकार लग्न के पद को संक्षेप में पद कहते हैं उसी तरह लग्न के उपपद को भी संक्षेप में केवल उपपद कहते हैं। जब इनके साथ भाव विशेष का नामग्रहण हो तो उस भाव से सम्बन्धित पद या उपपद समझना चाहिए। विषम राशि लग्न हो तो उसका पिछला भाव लग्न से द्वितीय भाव होगा। सम लग्न में वास्तविक द्वादश भाव का ग्रहण करना अभीष्ट है।

उपपद से स्त्री का विचार

तत्र पापस्य पापयोगे प्रव्रज्या दारनाशो वा ॥2॥

उपपद में या उपपद से द्वितीय स्थान में पापग्रह की राशि दृष्टि, युति या स्थिति हो तो मनुष्य संन्यासी होता है अथवा इसकी स्त्री की शीघ्र ही असमय में मृत्यु हो जाती है।

नात्र रविः पापः ॥3॥

इस प्रसंग में सूर्य को पापग्रह नहीं माना जाएगा। यदि सूर्य उपपद से द्वितीय स्थान में या उपपद में पापराशि में भी स्थित हो तो भी उक्त फल नहीं होगा।

शुभदृग्योगान्न ॥4॥

उपपद से यदि पूर्वोक्त योग बनता हो परन्तु उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि युति हो तो भी उक्त पत्नी-नाश आदि फल नहीं होता है।

पत्नीनाश का अन्य योग

नीचे वारनाशः ॥5॥

उपपद में इससे द्वितीय स्थान में कोई ग्रह स्व-नीच राशि में स्थित हो तो पत्नी का नाश हो जाता है।

उत्तरकालामृत्तकार इस स्थिति में दो पत्नियों का नाश मानते हैं। पाराशर होरा में नीचराशि के साथ नीच नवांश का भी ग्रहण है।

बहुपत्नी योग

उच्चे बहुदारः ॥6॥

उपपद में या इससे द्वितीय स्थान में उच्च राशि या उच्च नवांश में ग्रह स्थित हो तो मनुष्य की कई पत्नियाँ होती हैं।

युग्मे च ॥7॥

उपपद या उससे द्वितीय स्थान में मिथुन राशि स्थित हो तो भी मनुष्य को कई पत्नियाँ होती हैं।

बुढ़ापे में विधुर होने का योग

तत्र स्वामियुक्ते स्वर्क्षे वा तद्धेतावुत्तरायुषि निर्दारः ॥8॥

उस उपपद में यदि उपपद का स्वामी ग्रह स्थित हो तो मनुष्य प्रौढ़ावस्था के उपरान्त पत्नी से रहित हो जाता है। यदि उपपद भाव का स्वामी ग्रह कहीं

भी हो तो भी मनुष्य की पत्नी का मरण वृद्धावस्था में हो जाता है।

उपपद से ससुराल का विचार

उच्चे तस्मिन्नुत्तमकुलाद् दारलाभः ॥9॥

नीचे विपर्ययः ॥10॥

उपपद या उससे द्वितीय स्थान के स्वामी ग्रह यदि अपनी उच्च राशि में स्थित हों तो मनुष्य का विवाह उत्तम कुल में होता है। यदि उक्त दोनों ग्रहों में से कोई नीच राशि में स्थित हो तो मनुष्य का विवाह अच्छे कुल की कन्या से नहीं होता है।

सुन्दर स्त्री का योग

शुभसम्बन्धात् सुन्दरी ॥11॥

उपपद या उससे द्वितीय स्थान में शुभ ग्रहों की दृष्टि, युति आदि से सम्बन्ध हो तो मनुष्य की पत्नी सुन्दर होती है।

प्रथमाध्यायस्य चतुर्थ पादः

बदनामी से पत्नी-त्याग का योग

राहुशनिभ्यामपवादात्त्यागो नाशो वा ॥12॥

उपपद या उससे द्वितीय स्थान में राहु-शनि का योग या दृष्टि हो तो लोकापवाद के कारण मनुष्य अपनी पत्नी का त्याग कर देता है अथवा इसी कारण उसकी पत्नी का नाश हो जाता है।

इस विषय में भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली जो ज्योतिष जगत् में बहुत प्रसिद्ध है, यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इनकी जन्मकुण्डली जितनी प्रसिद्ध है, उससे कहीं अधिक यह तथ्य सुविदित है कि इन्हें लोकापवाद के कारण

अपनी पत्नी सीता का परित्याग करना पड़ा था। इस कुण्डली में यह योग पूर्णतया विद्यमान है।

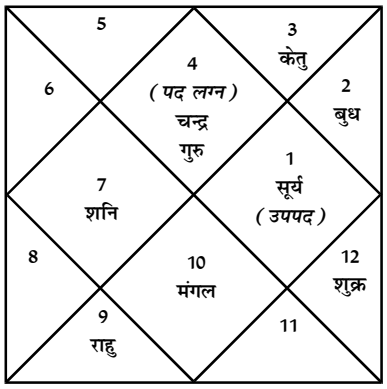

लग्न से द्वादश स्थान का स्वामी बुध, द्वादश से द्वादश में स्थित है। अतः बुध से द्वादश स्थान तक गिनने पर 'उपपद' दशम स्थान में पड़ता है। उपपद से द्वितीय स्थान में बुध की स्थिति व वहाँ सूर्य की शुभ स्थिति (उपपद में रवि शुभ होने के कारण) इनकी पत्नी की सुन्दरता की द्योतक है।

साथ ही उपपद पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। राहु की पंचम पूर्ण दृष्टि भी उपपद पर है। अतः सूत्र में बताया गया योग यहाँ पूर्णतः घटित होता है। किन्तु राशि दृष्टि से योग घटित नहीं होता है।

चतुर्थाध्याये पतिपरायण योगतृतीय पादः

बुधे त्रिकोणेषु चगुरौ पतिभक्तिपरायणा ॥81॥

यदि जन्म लग्न या नवांश में बुध व बृहस्पति परस्पर एक-दूसरे से त्रिकोण स्थानों में स्थित हों तो स्त्री अपने पति के प्रति समर्पित व तत्परायणा होती है।

गुरूत्रिकोणेषु च ॥82॥

यदि लग्न या नवांश से त्रिकोण स्थानों में बृहस्पति स्थित हों तो भी स्त्री पतिपरायण व समर्पित होती है।

सौभाग्यवती योग

शुक्रे सर्वसौभाग्यकारिणी ॥83॥

यदि लग्न या नवांश से त्रिकोण स्थानों में शुक्र स्थित हो तो स्त्री सभी प्रकार के सौभाग्यों से युक्त होती है।

सौभाग्य शब्द से तात्पर्य है सुभगत्व। भग का अर्थ है ऐश्वर्य। अतः सौभाग्य शब्द से पति-प्रेम, पुत्रवती होना, माननीय होना, कुलाग्रणी होना, ध न-सम्पत्ति से युक्त होना आदि सभी सुख आ जाते हैं।

शुक्र स्त्री कारक ग्रह है तथा प्रेम, विलास, कामोपभोग का प्रतिनिधि है, अतः त्रिकोण में इसकी स्थिति इन सब वस्तुओं की बढ़ोत्तरी अवश्य करेगी।

शुक्र त्रिकोणेषु च ॥84॥

यदि लग्न या नवांश में शुक्र बृहस्पति से त्रिकोण स्थानों में हो तो भी स्त्री सभी प्रकार के सौभाग्य से युक्त होती है।

*****